एक परिचय

परमेश्वर के स्वभाव की चर्चा करते समय बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। पहली बात, समस्त प्रकृति से ऊपर उस जीव के लिए ''प्रकृति'' शब्द का इस्तेमाल करना अनुपयुक्त हो सकता है। परमेश्वर की अलौकिकता[1] हर जगह, विशेषकर पवित्र शास्त्र में व्यक्त की जाती है (उदाहरण के लिए, यहोशू 2:11)। इसलिए, कहा जा सकता है कि परमेश्वर किसी भी प्रकार से ''प्राकृतिक'' नहीं है अर्थात वह प्रकृति से ऊपर है। वह *सुपर*-प्राकृतिक है।

दूसरा, परमेश्वर जो कि अलौकिक (जगत के ऊपर) और अन्तर्यामी (जगत में) भी है, की व्याख्या का प्रयास करने के लिए अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। यद्यपि किसी जीव के लिए ''यहां'' और ''वहां'' होने की दोनों बातें होनी कठिन हैं, परन्तु प्रेरितों 17:27 में इसी सच्चाई को व्यक्त किया गया है। वर्षों पहले शायद ऐसे ही किसी विचार से प्रेरणा पाकर जे. बी. फिलिप्पस को *योर गॉड इज़ टू स्मॉल* शीर्षक से गहन अध्ययन वाली एक पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली थी।[2] बिना सहायता के परमेश्वर को पूरी तरह से समझने की बात हमारे लिए असम्भव है। परमेश्वर के स्वभाव पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करने के लिए मनुष्यों को दीन होने की आवश्यकता है। हमारी बड़ी से बड़ी पूर्वधारणाएं भी परमेश्वर की ऊंचाई, लम्बाई, गहराई और चौड़ाई को नहीं समझ सकतीं (1 तीमुथियुस 6:16; 1 यूहन्ना 4:12)।

तीसरा, परमेश्वर को समझने की कोशिश करना हमारे जीवनों की सबसे बड़ी चुनौती है। परमेश्वर के सम्बन्ध में सोचने वाला कोई भी व्यक्ति उस पर सीमित रूप से विचार करता है। यदि हम अकेले संघर्ष कर रहे हैं, तो हमें स्वाभाविक ही अहसास होता है कि हम ऐसा संघर्ष कर रहे हैं जिसे जीता नहीं जा सकता। बाइबल को पढ़ने वाला हर व्यक्ति जानता है कि पवित्र शास्त्र इसकी पुष्टि करता है (देखिए यशायाह 55:8, 9)।

फिर, हमें क्या करना चाहिए? अपनी व्यक्तिगत सीमाओं तथा अभावों को मानकर हम विनम्र होने लगते हैं। हम अपने साथ अन्य स्रोतों का इस्तेमाल करते हैं और उत्सुकता से वाद-विवाद करने के परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार कर लेते हैं (यशायाह 1:18)। इस शृंखला के पहले भाग में, हम परमेश्वर के स्वभाव, हमारे साथ उसके सम्बन्ध के बारे

में और हम उससे कैसा सम्बन्ध रखते हैं जैसी बातों पर अध्ययन करेंगे। यह एक रोमांचकारी साहसिक कार्य होना चाहिए जिसके लिए हमारे साझे प्रयास होने आवश्यक हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]परमेश्वर ''श्रेष्ठतर है'' या प्रकृति की सीमा ''से आगे चला जाता है।'' [2]जे. बी. फिलिप्स, *योर गॉड इज़ टू स्मॉल* (न्यूयॉर्क: मैकमिलन कं., 1961)।